किताबों की किताब

पुस्तकालय आधारित गतिविधियों की मार्गदर्शिका

किताबों
किताबों
की
की
किताब
किताब

किताबों की किताब

मध्यप्रदेश की शालाओं में पुस्तकालय विकास की योजना का ध्येय सिर्फ शालाओं में पुस्तकालय प्रारंभ करना या पुस्तकें पहुँचाना भर नहीं है। पुस्तकालय की पुस्तकें बच्चों की शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बनें, किताबों के माध्यम से बच्चे अपनी शैक्षिक दक्षताओं का विकास कर सकें और साथ ही साथ वे पुस्तकों को पढ़कर ज्ञान और जानकारी के नये स्रोतों से परिचित हो सकें, ऐसे बहुत से काम इन पुस्तकालयों के माध्यम से करने की जरूरत है।

पुस्तकालय में बच्चे और शिक्षक दोनों के लिए उपयोगी पुस्तकें शामिल की गई हैं। बच्चों के लिए कहानी, कविता, गीत, जीवनी, संस्मरण, यात्रा वृतांत आदि के साथ ही गणित और विज्ञान पर केंद्रित किताबें हैं। इनका उपयोग वे शिक्षा के साथ ही मनोरंजन और अपने अनुभवों को विस्तार देने के लिए कर सकते हैं। शिक्षकों के लिए विभिन्न स्कूली विषयों की, संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग की जाने वाली पुस्तकों के साथ ही साहित्य और शैक्षिक विचारों से संबंधित किताबें भी उपलब्ध कराई गई हैं। विगत दो वर्षों में प्रदेश में सम्पन्न पुस्तक मेलों से भी पालक शिक्षक संघों ने अपनी शालाओं में पुस्तकालय स्थापित करने के लिए बच्चों और शिक्षकों के लिए किताबें खरीदी हैं।

शाला में छोटी कक्षाओं के बच्चों के बीच, शिक्षक और बड़े बच्चों की मदद से इन पुस्तकों के साथ क्या-क्या गतिविधियाँ की जा सकती हैं, यह 'किताबों की किताब' में बताया गया है। इन गतिविधियों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को किताबों के नजदीक लाना है, ताकि उनमें पुस्तकालय के प्रति अधिक से अधिक रुचि उत्पन्न हो सके। पुस्तिका में दी गई गतिविधियाँ प्राथमिक शाला के छोटे बच्चों के लिए हैं, लेकिन इन्हें बड़ी कक्षाओं के बच्चों के साथ भी आसानी से किया जा सकता है। अधिकांश गतिविधियाँ पुस्तक आधारित हैं, लेकिन कुछ गतिविधियाँ रंगों, कागज और अन्य सामग्री की मदद से की जा सकती हैं। ' किताबों की किताब ' में दी गतिविधियाँ सिर्फ गतिविधियाँ भर नहीं हैं। यह क्यों की जा रही हैं, शिक्षक के लिए यह समझना बहुत जरूरी है।

शिक्षकों की कल्पनाशीलता से बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय शिक्षण के लिए भी यह पुस्तिका बहुत उपयोगी साबित हो सकती है। साथ ही इसकी गतिविधियाँ पुस्तकालय एवं भाषा शिक्षण के पीरियड में भी कराई जा सकती हैं।

चित्र : [illegible]

बच्चों के बीच इस पुस्तिका का उपयोग करते समय शिक्षक यह जानने की कोशिश भी करें कि कौन-सी गतिविधियाँ बच्चों को रुचिकर लगीं और किन गतिविधियों के आयोजन में उन्हें दिक्कत हुई या बच्चों ने दिलचस्पी नहीं ली। अपने निष्कर्षों के आधार पर शिक्षक न सिर्फ गतिविधियों का चयन एवं उनमें बदलाव कर सकते हैं, वरन् कुछ नई-पुस्तक आधारित-गतिविधियाँ ईजाद कर उन्हें उपयोग में ला सकते हैं।

इस पुस्तक में दी गई गतिविधियों को आयोजित करने के पूर्व शिक्षकों को कुछ बुनियादी बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। वे हैं –

- गतिविधि के उद्देश्य को ध्यान में रखें।
- पुस्तकों का चयन गतिविधियों के हिसाब से करें।
- बच्चों का समूहीकरण - छोटे-बड़े समूह बनाने का कार्य भी गतिविधि के अनुसार करें।
- गतिविधि में भाग लेने वाले बच्चों को पंक्तिबद्ध या अर्धवृत्ताकार रूप में या उपलब्ध जगह और सुविधानुसार बिठाएँ।
- गतिविधि की प्रक्रिया प्रतियोगी न हो। वरन् सभी बच्चों को प्रोत्साहित करने वाली, सहयोगी एवं सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने वाली हो।
- किताबें रखने के लिए दरी या अखबार या जो भी साधन उपलब्ध हो, उसका उपयोग करें।
- बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिये आवश्यकता अनुसार गतिविधि के बीच-बीच में अथवा अंत में सभी बच्चों से तालियाँ बजवाई जा सकती हैं। ध्यान रखें पुस्तकालय का एक उद्देश्य बच्चों में किताब के प्रति रुचि जागृत करना भी है। अतः उनकी पढ़ने, सुनने या समझने की क्षमता के संबंध में नकारात्मक टिप्पणी करने से बचें।

इस मार्गदर्शिका को बनाने में जिन भी व्यक्तियों ने सहयोग दिया है, और जिन भी स्रोतों से इस पुस्तिका में सामग्री ली गई है उन के प्रति राज्य शिक्षा केन्द्र आभार व्यक्त करता है। राज्य शिक्षा केन्द्र, यूनिसेफ का विशेष आभारी है, जिसने इस पुस्तिका को सुंदर रूप में मुद्रित कर प्रदेश की शालाओं को उपलब्ध कराने की पहल की है।

उम्मीद है यह किताब प्राथमिक शाला में पुस्तकालय तथा भाषा शिक्षण के बारे में नए सिरे से सोचने और बच्चों से आत्मीय रिश्ता बनाने में शिक्षकों की मदद करेगी।

एम.के. सिंह
संचालक

शीर्षक बने कहानी

कहानियाँ किताबों में होती हैं। अगर किताबों के शीर्षक से ही कहानी बन जाए तो कैसा रहे। इस गतिविधि में बच्चे किताबों के नाम से परिचित होंगे। साथ ही साथ उनमें कल्पना शक्ति का विकास भी होगा।

1. पहले सब बच्चे किताबों को पाँच-दस मिनट ध्यान से देख लें।

2. अब कोई भी एक बच्चा एक किताब के शीर्षक का प्रयोग करके एक वाक्य बनाए।

3. अगला बच्चा किसी अन्य किताब का शीर्षक लेकर ऐसा ही वाक्य बनाए। यह ध्यान रखना है कि नया वाक्य पिछले वाक्य में कही गई बात को आगे बढ़ाए।

4. बस इसी तरह किताबों के शीर्षक का उपयोग करके मजेदार कहानी या एक छोटा-सा पैराग्राफ बन जाएगा।

अन्ताक्षरी

अन्ताक्षरी से सभी परिचित होते हैं, जरूरी हो तो एक बार सबको बता दें। यह गतिविधि किताबों के नामों (शीर्षक) से अन्ताक्षरी खेलने की है। इसे एक समूह में बैठकर या दो समूहों में बँटकर खेला जा सकता है। बच्चों को पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों के नाम से परिचित कराना इसका उद्देश्य है।

1. किताबें बीच में फैला दें।
2. सब बच्चे पाँच–दस मिनट किताबों को ध्यान से देख लें। उलट–पलट लें।
3. अब किसी एक किताब का नाम लें।
4. सब किताब का नाम ध्यान से सुनें।
5. इस किताब के नाम के अंतिम अक्षर से जिस किताब का नाम शुरू होता हो उसे ढूँढें।
6. बस इसी तरह अन्ताक्षरी आगे बढ़ती जाएगी।
7. जिस किताब का नाम एक बार अन्ताक्षरी में आ जाए उसे अलग रखते जाएँ।
8. अगर कहीं ऐसा लगे कि अन्ताक्षरी आगे नहीं बढ़ रही है तो किसी अन्य किताब का नाम लेकर खेल फिर से शुरू करें।
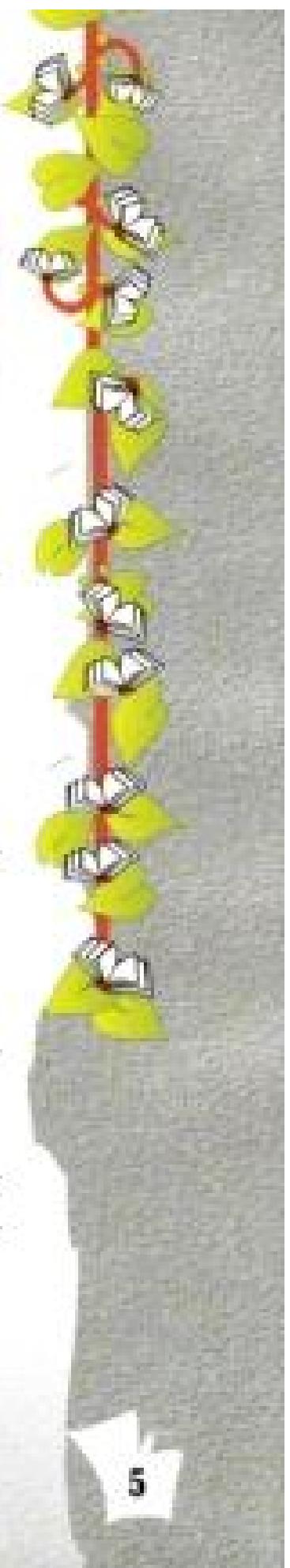
इस गतिविधि का उद्देश्य है कि बच्चे किताबों को उलट-पलटकर उन्हें हाथ में लेकर देखें। वे किताबों के नजदीक आएँ। इस गतिविधि से बच्चों में नाप लेने के कौशल का विकास भी होगा।

1. पुस्तकालय में उपलब्ध किताबें बच्चों के बीच रखें।
2. बच्चे प्रत्येक किताब की लम्बाई-चौड़ाई स्केल से नापकर नोट करते जाएँ। नाप, इंच या सेंटीमीटर जिसमें भी संभव हो लिखें।
3. यह गतिविधि बच्चों को टोलियों में बाँटकर भी की जा सकती है।
4. गतिविधि के अंत में पुस्तकालय की सबसे छोटी और सबसे बड़ी किताब कौन-सी है, यह हर बच्चे को पता होगा।

जिन खोजा, तिन पाईयाँ

मुहावरे–कहावतें जीवन का हिस्सा हैं। बच्चे उनका अर्थ समझें, बातचीत में उपयोग करें तो उनके भाषा ज्ञान में वृद्धि ही होगी। गतिविधि का उद्देश्य है कि बच्चे मुहावरे–कहावतें ढूँढने के उपक्रम में किताब पढ़ें।

गतिविधि – एक

1. कहानियों या निबंधों की किताबें बच्चों में बाँट दें।
2. किताब पढ़ते हुए बच्चों को जो भी मुहावरें–कहावतें मिलें वे उन्हें एक कागज़ पर लिखते जाएँ।
3. इन मुहावरों–कहावतों के अर्थ पर बच्चे आपस में चर्चा करें। जिनका अर्थ न आता हो, उनके बारे में शिक्षक बताएँ।

गतिविधि – दो

यह गतिविधि एक अन्य तरीके से भी की जा सकती है। बच्चों को पहले से ही कुछ मुहावरे या कहावतें दे दें। बच्चों से उन्हें किताबों में ढूँढने के लिए कहें।
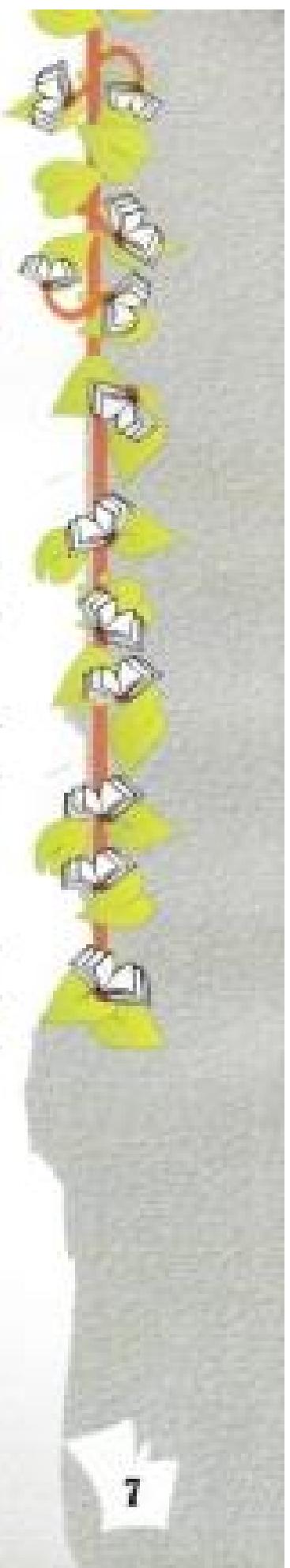
देखो चित्र, कहो कहानी

1. बच्चों के बीच ऐसी किताबें रखें जिनमें बड़े–बड़े चित्र हों। लिखी सामग्री कम हो।
2. बच्चे किताबों को ध्यान से देखें, पढ़ें।
3. अब कोई भी एक किताब चुनकर उसके चित्रों के आधार पर बच्चे नई कहानी बनाएँ।
4. कहानी कोई एक बच्चा भी बना सकता है और कई बच्चे मिलकर भी।
5. एक से अधिक कहानी भी बनाई जा सकती हैं।
6. यह गतिविधि उल्टे रूप में भी करवाई जा सकती है। बच्चे कहानी पढ़कर, कहानी के लिए चित्र बनाएँ।

अंत में क्या हुआ?

गतिविधि का उद्देश्य बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न करना है। अपनी जिज्ञासा शांत करने के लिए वे निश्चित ही किताबों को पलटेंगे।

1. बच्चों को बिना बताए पुस्तकालय में उपलब्ध किसी किताब से एक या दो रोचक कहानियों के सार सुनाएँ। ध्यान रहे आपको कहानी याद करके सुनानी है। यानी बिना किताब के।

2. कहानी को किसी ऐसे मोड़ पर अधूरा छोड़ दें, जहाँ से आगे जानने की जिज्ञासा बच्चों में पैदा हो जाए।

3. बच्चों से कहें कि अब वे यह किताब और कहानी ढूँढ कर पढ़ें।

4. यह गतिविधि कविताओं के साथ भी की जा सकती है। किसी रोचक कविता का एक अंश याद करके बच्चों को सुनाएँ। बच्चों से कहें कि बाकी कविता वे खुद ढूँढकर पढ़ें।
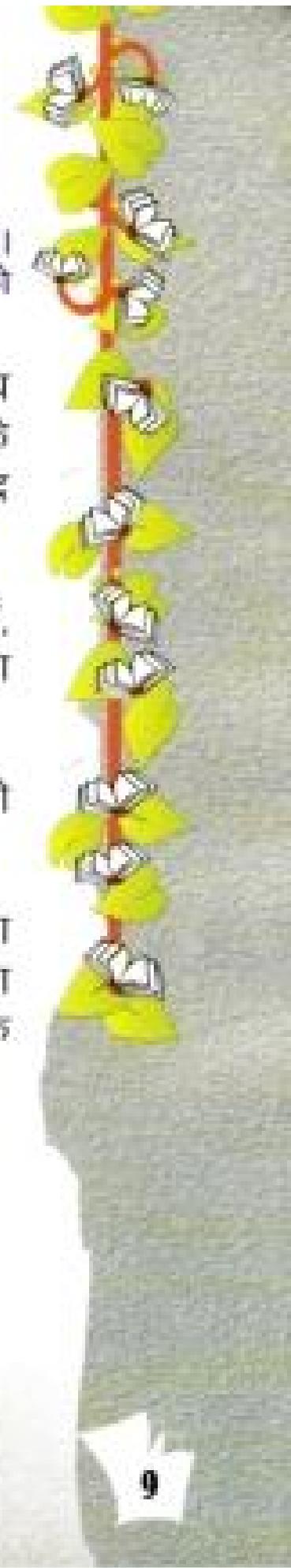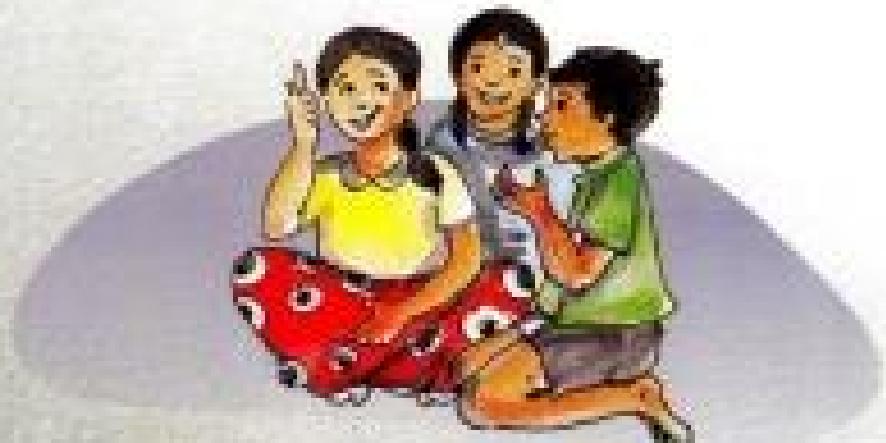
नाम में क्या रखा है ?

हर नाम एक परिचय देता है। पर क्या वह नाम पूरा परिचय दे रहा है, यह देखना रोचक प्रक्रिया हो सकती है। गतिविधि का उद्देश्य बच्चों में विश्लेषण के कौशल को विकसित करना है।

1. बच्चे कहानी की किताब से कोई एक कहानी चुनें।
2. इस कहानी को कोई एक बच्चा पढ़कर सबको सुनाए।
3. सब कहानी को ध्यान से सुनें।
4. कहानी के नाम पर चर्चा करें। यह समझने की कोशिश करें कि कहानी का यह नाम क्यों रखा गया।
5. अब सब मिलकर कहानी के लिए एक नया नाम सोचें।
6. जो नाम सोचा गया, उस पर चर्चा भी करें। नाम एक से अधिक भी हो सकते हैं।
7. यह गतिविधि कविताओं के साथ भी की जा सकती है।
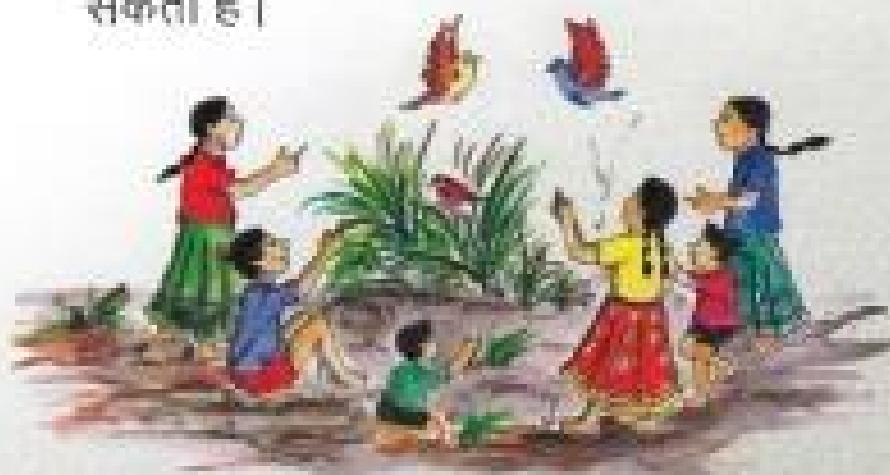
मैं हूँ कौन?

1. कहानी या कविता के कुछ पात्रों को, चुनकर, बच्चे उनकी विशेषताओं की चर्चा आपस में करें।
2. पात्रों की विशेषताओं को पर्चियों पर लिख लें।
3. पर्चियों को मोड़कर बंद कर दें। सब को गड्ड–मड्ड करके बीच में रख दें।
4. अब कोई बच्चा एक पर्ची उठाकर अपनी टोली में तीसरे या चौथे नंबर पर बैठे बच्चे को दे। जिसे पर्ची मिले वह पर्ची में लिखी विशेषताओं को एक–एक करके पढ़े।
5. विशेषताओं को सुनकर पर्ची उठाने वाले को बताना है कि 'वह कौन है ?' किस कहानी या कविता का पात्र है। कहानी या कविता का लेखक कौन है ?

खोजो तो जानें?

1. रंगीन चित्र कथाओं वाली किताबें बीच में रख लें।
2. चार–पाँच बच्चे अपनी पसंद की एक–एक किताब चुन लें।
3. अब कोई एक बच्चा अपनी किताब के किसी एक चित्र के बारे में कम से कम पाँच बातें बताए। बाकी सब ध्यान से सुनें।
4. बताते समय यह ध्यान रखना है कि ये बातें किस चित्र के बारे में हैं। यह किसी और को पता नहीं चलना चाहिए। कही जाने वाली बातें किताब में चित्र के साथ लिखी भी नहीं होनी चाहिए।
5. बताने के बाद किताब बंद करके किसी ऐसे बच्चे को दे दें, जिसके पास किताब न हो।
6. जिसे किताब मिले उसे कही गई बातों के आधार पर किताब में उसी चित्र को ढूँढना है।
7. जब चित्र ढूँढ लिया जाए तो यही गतिविधि कोई दूसरा बच्चा अपनी चुनी हुई किताब से देखकर करे।

चित्र देखकर कहानी बताओ

1. शिक्षक तीन–चार बच्चों के कुछ समूह बना लें।
2. अब बच्चों के समूहों को कटी–फटी पुरानी खराब किताबों में से चित्र काटने को कहें ।
3. शिक्षक बच्चों को कोई कहानी आदि को सोच कर चित्रों को चिपकाने को कहें।
4. चित्र चिपक जाने पर शिक्षक इन चित्रों को दूसरे समूह को अंदाज लगा कर कहानी लिखने को कहें।
5. शिक्षक इन्हीं चित्रों को अन्य समूह को देकर कविता या चित्र के बारे में लिखने को कहें।

   शिक्षक अब दूसरे समूह द्वारा लिखी कहानी को चित्र चिपकाने वाले बच्चों को पढ़ने के लिए दें।
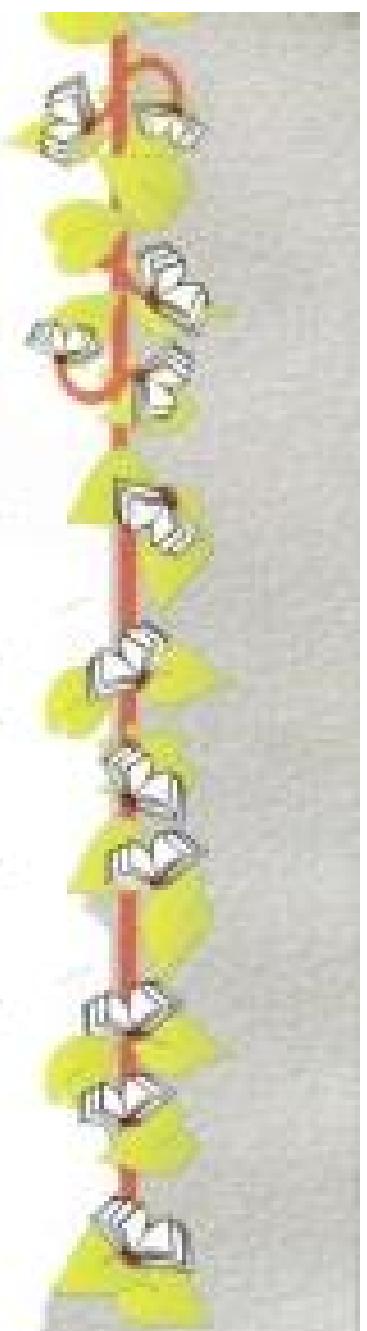
बूझ किताब तोरी

जब बच्चे पुस्तकालय की किताबों से परिचित हो जाएँ, तब उनके बीच यह गतिविधि करवा सकते हैं।

1. पुस्तकालय से पन्द्रह से बीस किताबें चुन लें।
2. किताबें बच्चों के बीच बाँट दें। उन्हें दस से पन्द्रह मिनट किताबों को पढ़ने, उलटने–पलटने के लिए कहें? गतिविधि में भाग लेने वाला प्रत्येक बच्चा हर किताब को ध्यान से देख ले।
3. अब किसी एक बच्चे की आँख पर पट्टी बाँध दें। उसे किताबों के ढेर से एक किताब उठाने को कहें।
4. बाकी बच्चे बारी–बारी से उस किताब को देखकर उसकी कुछ विशेषताएँ बोलेगें।
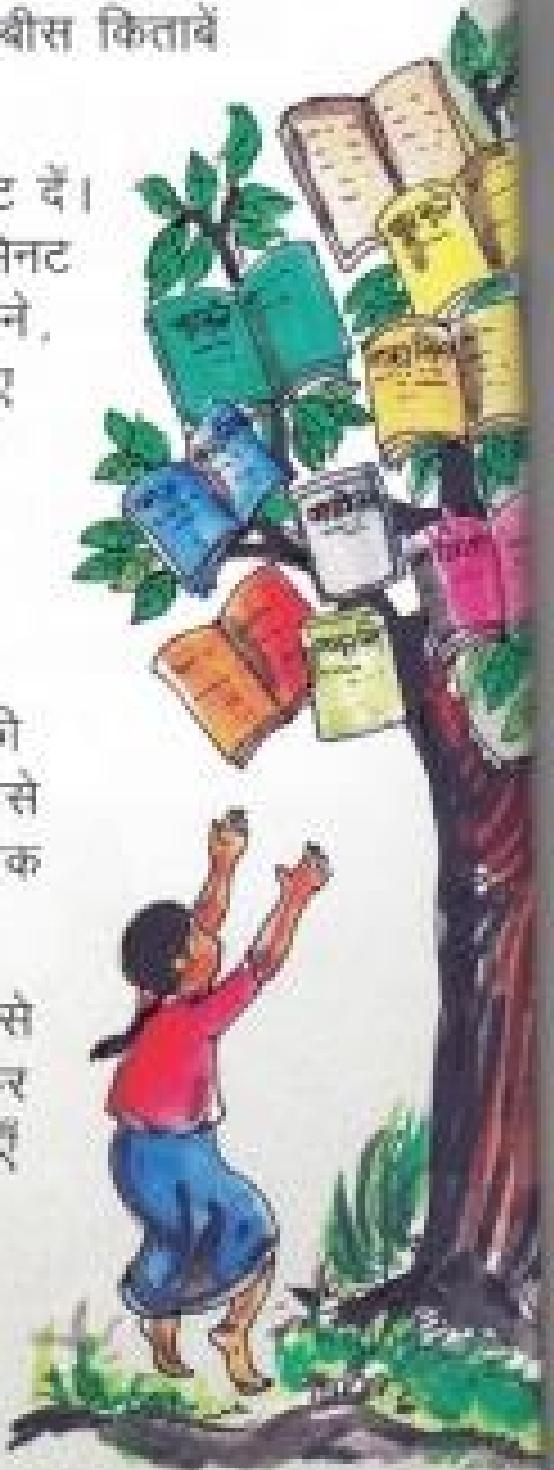
5. पट्टी वाले बच्चे को विशेषताएँ सुनकर किताब को पहचानना है। विशेषताएँ तब तक बताई जाती रहेंगी जब तक किताब की पहचान न हो जाए।

6. ध्यान रखें कि किताब का नाम या उसमें शामिल, कहानी, कविता, पात्र, लेख का शीर्षक विशेषता के रूप में नहीं बताना है।

7. विशेषता के रूप में चित्र कहानी के पात्र, कहानी का सार, कविता की पंक्ति, कविता का सार, लेख की विषय वस्तु आदि बताई जा सकती है।

8. पट्टी वाले बच्चे को किताब हाथ में लेकर उसके आकार के आधार पर किताब को पहचानने का मौका भी मिलना चाहिए।
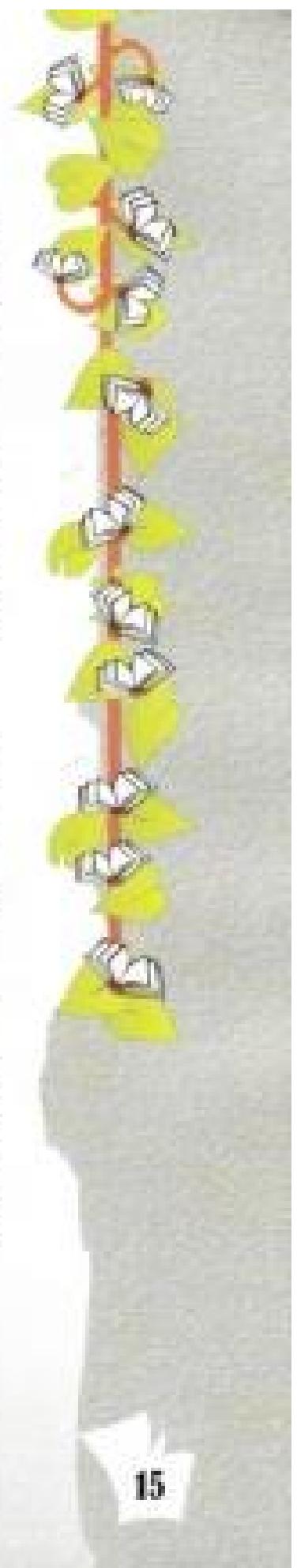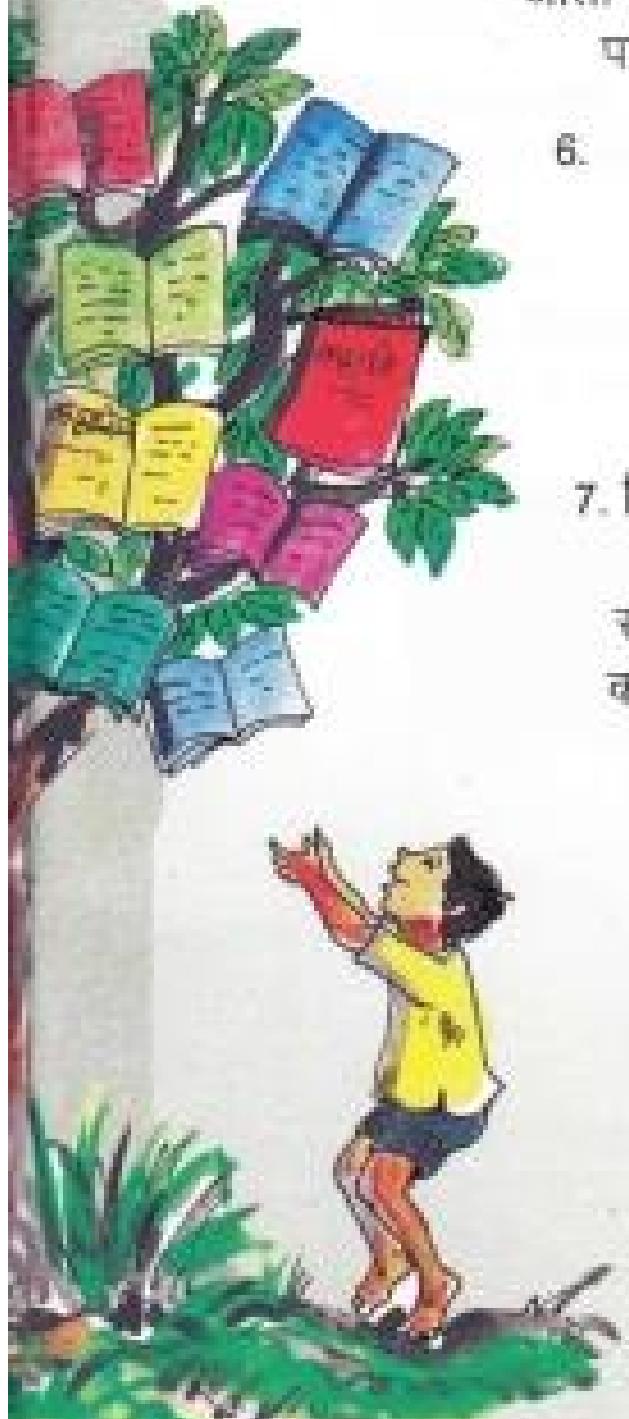
सही क्रम से लगाओ

गतिविधि–एक

1. शिक्षक पुस्तकालय से कविता की किताब से कविता चयनित करें।
2. अब इस कविता की लाइनों को सादे कागज की अलग–अलग पट्टियों में लिख दें। पट्टियों को गड्ड-मड्ड कर दें।
3. अब बच्चों के समूह को इसे सही क्रम में लगाने को कहें।
4. शुरुआत में यह गतिविधि बच्चों के बीच प्रचलित कविताओं के साथ करें।
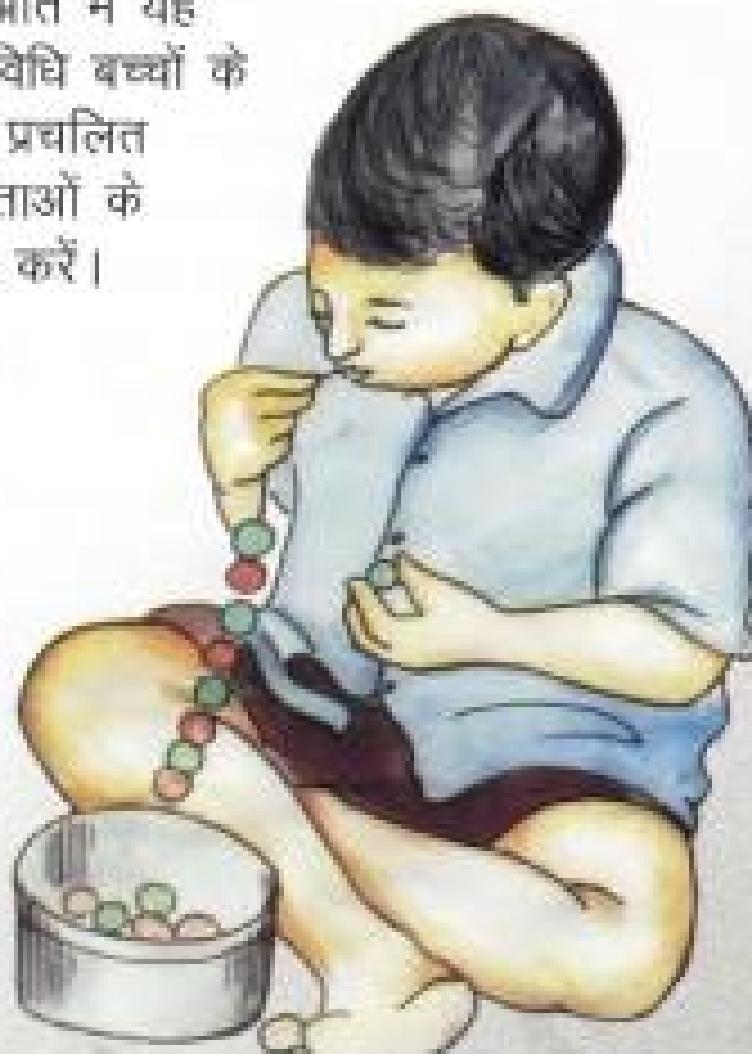
अंदाज लगाओ, कविता बनाओ

गतिविधि–दो

1. अब शिक्षक बच्चों को कोई दो अलग- अलग कविता की पंक्तियों को पट्टियों में लिखकर दें।
2. अब बच्चे समूह में या अकेले इन पक्तियों को पढ़ते हुए कविता की लाइनों को सही क्रम में रखें।
3. शुरूआत में यह गतिविधि बच्चों द्वारा पढ़ी–सुनी कविताओं के साथ करें।

गतिविधि–तीन

1. शिक्षक इसी प्रकार क्रमशः इन गतिविधियों के बाद ऐसी कविताओं की किताबों से कविता की लाइनों की पट्टियाँ बनाएँ जो बच्चों ने पहले पढ़ी नहीं हों।
2. शिक्षक इन पट्टियों को बच्चों के समूह को दें।
3. अब शिक्षक बच्चों से इन्हें पढ़कर अंदाज लगाते हुए कविता के सही क्रम में रखने को कहें ।
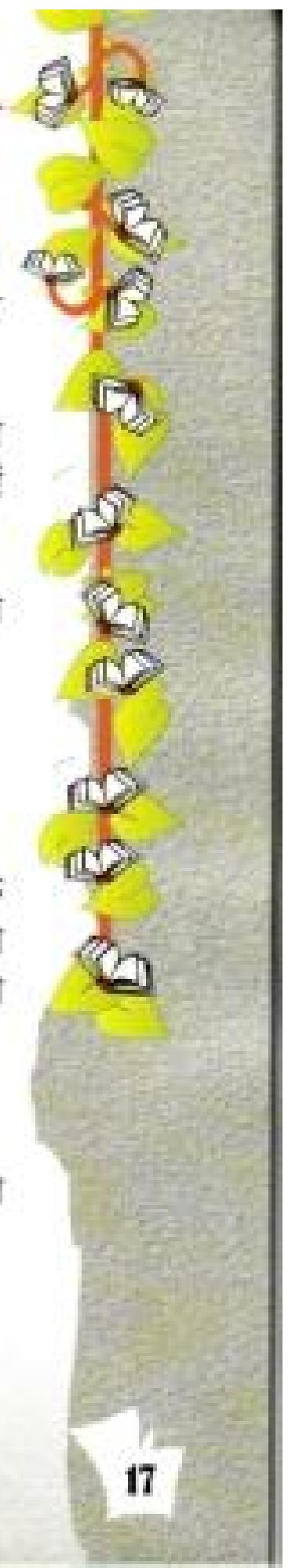
कहानी आगे बढ़ाओ

1. शिक्षक बच्चों द्वारा पूर्व में पढ़ी या सुनी कहानियों का चयन करें।
2. अब शिक्षक बच्चों को ऐसी ही कोई कहानी सुनाएँ।
3. लेकिन शिक्षक ध्यान रखें कहानी का अंत कुछ अलग तरह से करें।

   जैसे:– शेर व खरगोश की कहानी में शिक्षक अंत में कह सकते हैं कि चूंकि शेर ने खरगोश की चालाकी के बारे में सुन रखा था। जिसके कारण उसके दादा कुएँ में अपनी परछाई देखकर कूद गए और मर गए। शेर अब सब कुछ समझ गया है। अब वह यह गलती नहीं करेगा। तब उस परिस्थिति में खरगोश कैसे बचा होगा ?

4. शिक्षक इस स्थिति में बच्चों को कहानी आगे बढ़ाने को कहें।
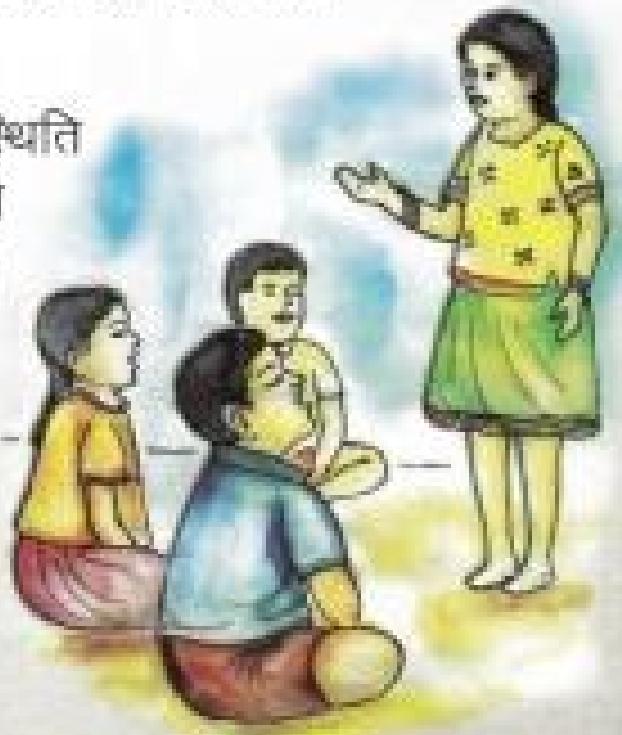
अब मेरा किस्सा

1. शिक्षक किसी कहानी की किताब का चयन करें।

2. शिक्षक किसी एक कहानी के अलग- अलग पेज अलग-अलग बच्चों से पढ़वाएँ। शिक्षक बच्चों को क्रम से पेज पढ़ने की जगह कहीं से कोई भी पेज पढ़ने के लिए दें।

3. जब कहानी के सभी पेज अलग-अलग बच्चों द्वारा पढ़ लिए जाएँ तब शिक्षक उस बच्चे को बुलाएँ जिसे लगता हो कि उसने कहानी के शुरू का पेज पढ़ा है।

4. वह बच्चा अपने पढ़े हिस्से को सभी को मौखिक बताए।

5. कहानी के इस हिस्से के बाद जिस बच्चे को लगे कि उसके द्वारा पढ़ा हिस्सा आगे का हिस्सा है वह उसे सुनाए। इसी प्रकार सभी बच्चे क्रम से कहानी सुनाएँ।

आओ एक्टर बनें

1. शिक्षक बच्चों द्वारा पढ़ी–सुनी गई किसी कहानी के बारे में बच्चों से पूछें।

2. अब शिक्षक कहानी के अलग–अलग पात्रों की जगह अलग–अलग बच्चों को चुनें।

3. अब बच्चे कहानी के पात्र के अनुसार नए संवाद के साथ एक अलग कहानी बनाएँ।

इस गतिविधि में बच्चे अपनी सूझ–बूझ से अपने पात्र को ज्यादा मजबूत बनाने की कोशिश करेंगे। साथ ही इसके संवाद व रचित परिस्थितियों के अनुरूप अपने पात्र को मजबूत करने का प्रयास करेंगें। इस प्रकार यह प्रक्रिया कहानी को नए रूप में प्रस्तुत करेगी।

मेरी प्रिय पुस्तक

1. जब सब बच्चे पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों से परिचित हो जाएँ, तो यह गतिविधि की जा सकती है।
2. हर बच्चा अपनी पसंद की एक या दो किताबों के बारे में लिखे।
3. किताब उस बच्चे को क्यों पसंद है। किताब की कौन-सी कहानी या किताब का लेख जो भी उसे अच्छा लगा हो, उसके बारे में सबको बताए या लिखे।
4. गतिविधि का परिचय कराने के लिए शिक्षक स्वयं भी अपनी पसंद की किसी किताब के बारे में बच्चों को बताएँ।
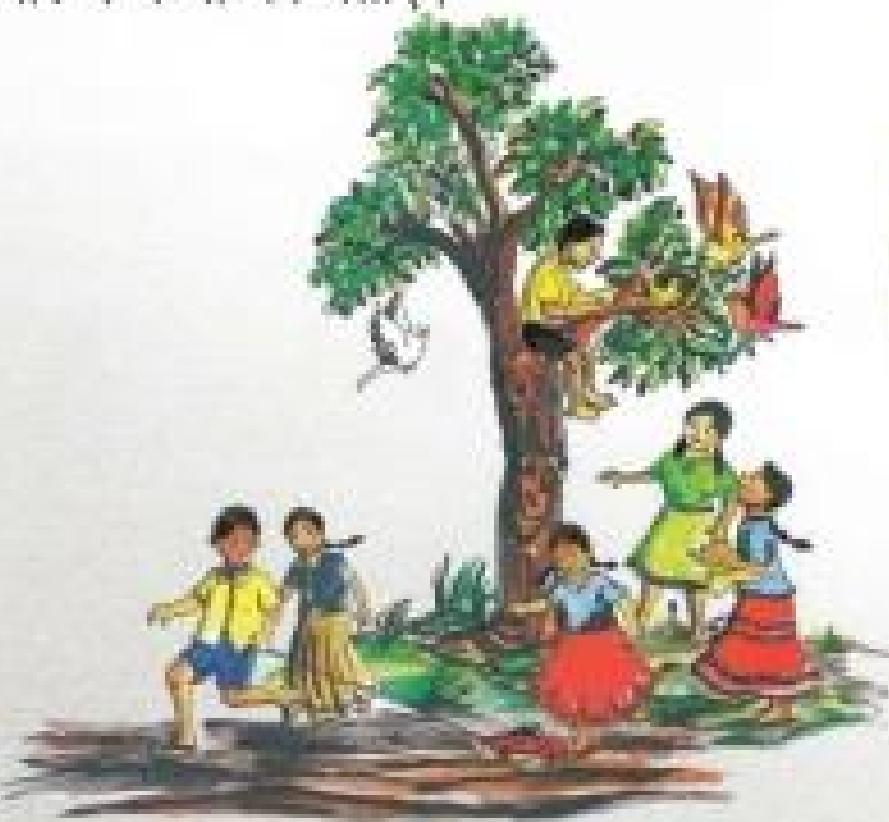
अब मेरी बारी

1. शिक्षक कुछ कविताओं की अलग–अलग वाक्य पट्टियाँ बनाएँ।

2. इन वाक्य पट्टियों को अलग–अलग बच्चों को बाँट दें।

3. उस बच्चे को पहले बोलने को कहें जिसको लगता है कि उसके पास कविता की पहली लाइन है।

4. इसी क्रम में कविता की अगली लाइन वाले बच्चों को स्वेच्छा से बोलने को कहें।

5. कविता का क्रम पहले बच्चों से पूरा करवाएँ। उसके बाद पूरी कविता का वाचन करवाएँ। पुस्तक या कविता चार्ट के द्वारा बच्चों से स्वयं क्रम ठीक करवाएँ।

यह गतिविधि पहले बच्चों द्वारा पढ़ी गई कविता के साथ करें। बाद में किसी ऐसी कविता के साथ करें जिसे बच्चों ने पहले पढ़ा न हो।

अंदाज लगाओ

1. शिक्षक बच्चों को एक या दो के समूह में बाँट दें। इन समूहों को अपनी मन-पसंद एक-एक किताब उठाने को कहें।
2. अब शिक्षक किताब के किसी भी पेज को खोलें।
3. अब उस किताब के पेज में एक खाली कागज नीचे बने चित्रानुरूप रखें।
4. अब बच्चों से दिख रही लाइनों को पढ़कर, छुपी हुई लाइनों का अंदाज लगाने को कहें।
5. इस गतिविधि में शिक्षक अभ्यास के अनुसार लिखे हुए भाग को क्रमशः कम या ज्यादा छुपा सकते हैं।

यह गतिविधि पुरानी या फटी हुई किताबों से भी की जा सकती है।
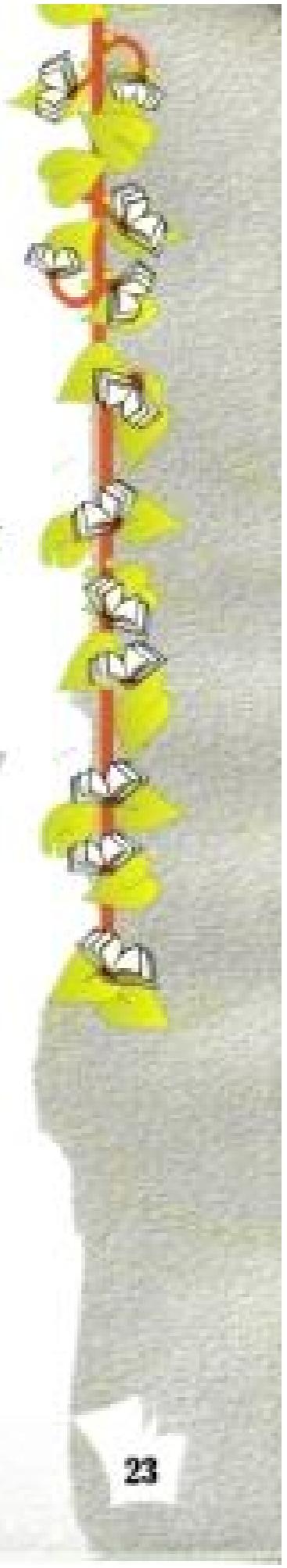
तुम क्या करते ?

1. शिक्षक बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी गई कहानियों के बारे में चर्चा करें।

2. किसी एक कहानी के बारे में बच्चों से उस कहानी के पात्र की जगह होने पर क्या करते, यह पूछें।

3. किसी एक बच्चे द्वारा बताई जा रही कहानी को दूसरा बच्चा नोट करता जाए।
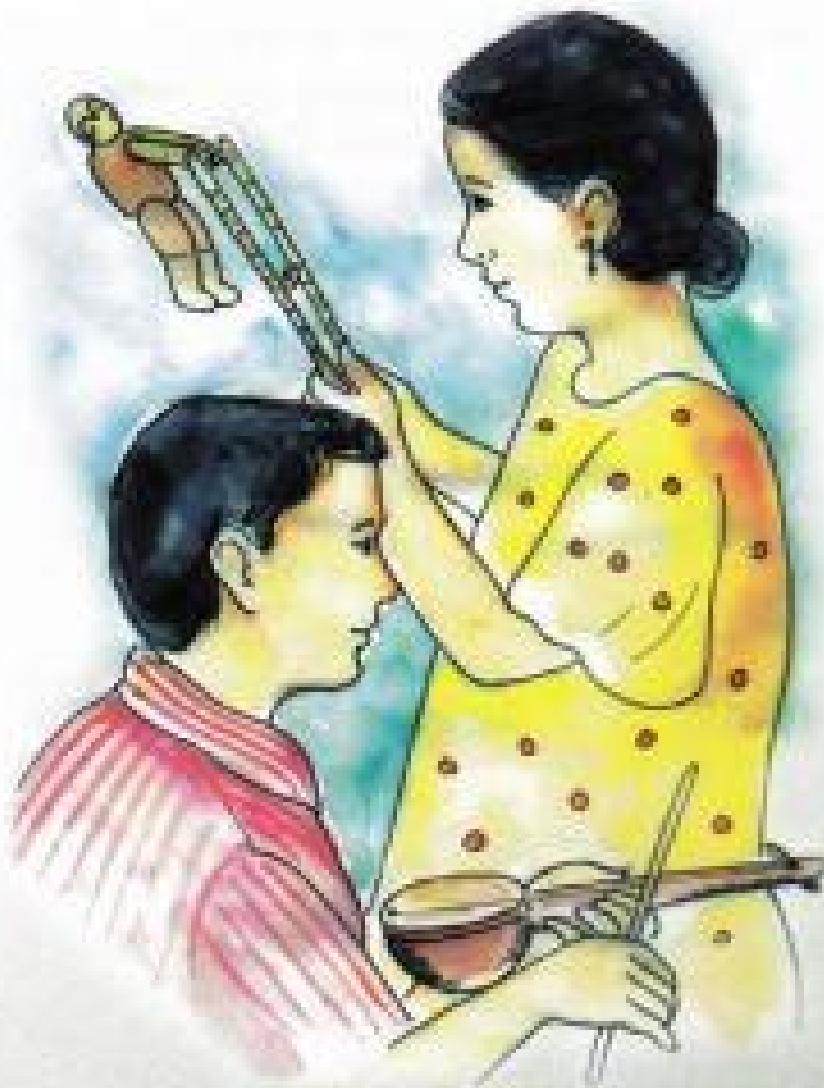
लिखो कहानी, अपनी मनमानी

1. कहानी की शुरुआत करने के लिए कोई एक वाक्य बोर्ड पर लिख दें।
2. अब बारी-बारी से हर बच्चे को एक-एक वाक्य उस कहानी में जोड़ते जाना है।
3. इस तरह एक नई कहानी तैयार हो जाएगी।
4. यही गतिविधि कई अन्य तरीकों से भी हो सकती है। किसी एक कहानी के शुरुआती चार-पाँच वाक्य बच्चों को बोलकर लिखवा दें या बोर्ड पर लिख दें।
5. अब हर बच्चे को इस कहानी को पूरा करना है।
6. कहानी पढ़ी या सुनी हो सकती है, पर यह कोशिश होनी चाहिए कि बच्चे अपने मन की बात जोड़कर कहानी पूरी करें।
7. जब सब बच्चे अपनी कहानी पूरी कर लें, तो सब अपनी – अपनी कहानी पढ़कर सुनाएँ।
8. यह गतिविधि कविता बनाने के लिए भी की जा सकती है।

गीत-कविता पाठ

1. कविताओं की कुछ किताबें चुनकर बच्चों को दें।
2. बच्चे अपनी पसंद से इन किताबों से कुछ कविताएँ या गीत छाँटकर उन्हें याद करें।
3. अगर संभव हो तो शिक्षक इन कविताओं को गाकर, बच्चों को इनकी लय भी बता दें।
4. हर बार पुस्तकालय की गतिविधि शुरू करने से पहले कोई एक सुंदर कविता या गीत गाया जाए।
5. हर बार नए बच्चे को मौका दिया जाए।
6. कुछ गीतों को सामूहिक रूप से या टोलियों में भी गाया जा सकता है।

नाटक का खेल

1. पुस्तकालय की किताबों में नाटक संग्रह भी होंगे।
2. संग्रह के नाटकों को पहले सब बच्चों के बीच पढ़ा जाए।
3. फिर संग्रह के किसी एक नाटक को कक्षा में ही मंचित करने का प्रयास किया जाए।
4. अगर बच्चों में ज्यादा रुचि हो तो संग्रह से नाटक को चुनकर उसको तैयार करके स्कूल के वार्षिक कार्यक्रम में या ऐसे ही किसी अन्य अवसर पर खेला जा सकता है।
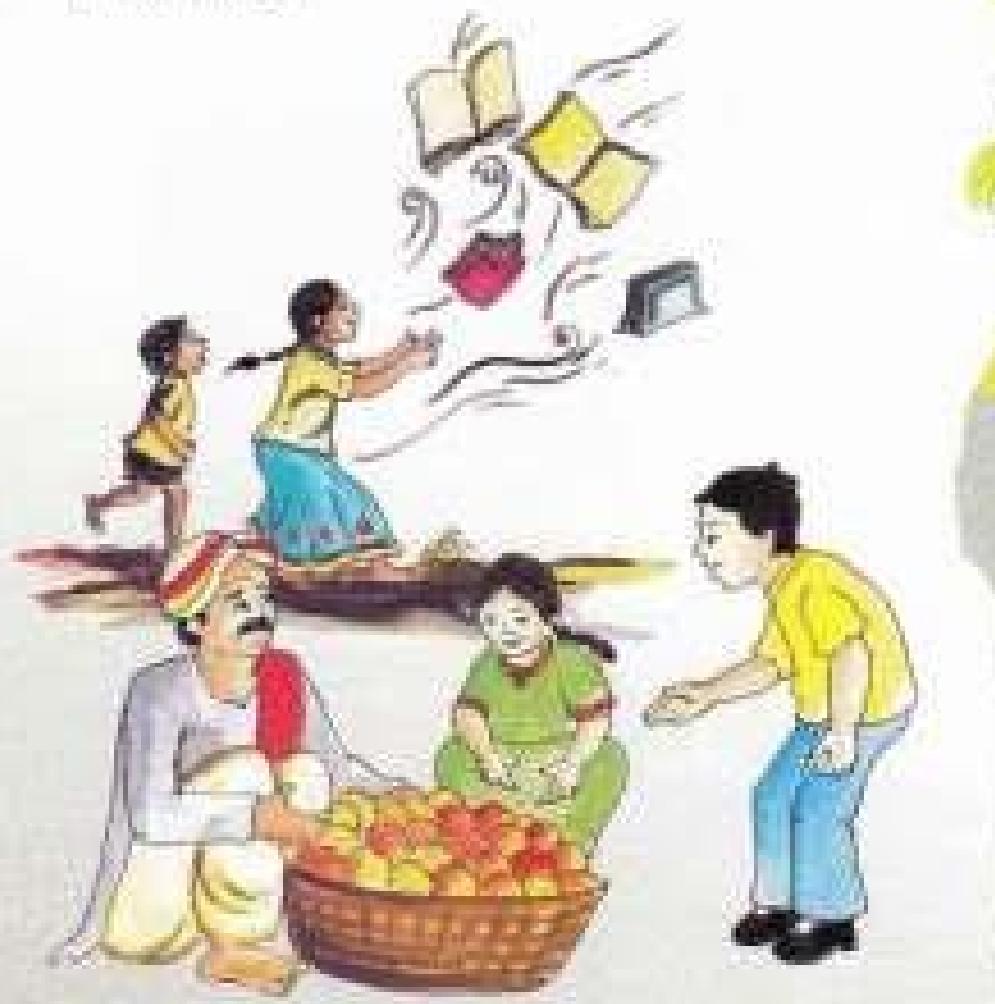
चुटकुलों का मंचन

1. बच्चों को चुटकुले सुनने-सुनाने में मजा आता है।
2. बच्चों की झिझक दूर करने के लिए उन्हें कक्षा में चुटकुले सुनाने के लिए कहें।
3. बच्चे चुटकुलों का मंचन भी कर सकते हैं। आमतौर पर चुटकुलों में दो-तीन पात्र ही होते हैं। अतः दो-तीन बच्चे मिलकर एक चुटकुला प्रस्तुत कर सकते हैं।
4. नए-नए चुटकुले खोजने के लिए वे किताबों की तरफ आकर्षित होंगे।

आज का विचार

1. कक्षा में प्रतिदिन ब्लैकबोर्ड पर एक नया विचार या कविता की पंक्ति लिखें।
2. इनका चयन पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों से ही किया जाए।
3. चयन करने की जिम्मेदारी कक्षा के बच्चे ही आपस में बाँट लें।
4. हर दिन की जिम्मेदारी नए बच्चे के पास हो।

महान व्यक्तित्व

साल भर में विभिन्न महान व्यक्तियों की जयंतियाँ आदि पड़ती हैं। साथ ही विभिन्न दिवस भी मनाए जाते हैं।

इनसे संबंधित संक्षिप्त टिप्पणी लिखने की जिम्मेदारी बारी-बारी से प्रत्येक बच्चे को दी जाए। टिप्पणी लिखने के लिए आवश्यक जानकारी पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों से एकत्रित करने के लिए कहें। टिप्पणी बनाने के लिए किन किताबों की मदद ली, बच्चे इसका उल्लेख भी करें।

पुस्तक से प्रोजेक्ट

पुस्तकालय में निश्चित ही ऐसी किताबें होंगी जिनमें छोटे खिलौने, विज्ञान के मॉडल या ऑरीगेमी की चीजें बनाने की विधियाँ दी गई होंगी।

1. शिक्षक इन किताबों से चुनकर ऐसी ही कुछ गतिविधियों की सूची बना लें।
2. हर बच्चे या टोली को कोई एक गतिविधि करने या प्रोजेक्ट बनाने का काम दिया जाए।
3. शिक्षक केवल बच्चे को यह बताएँ की उक्त गतिविधि या प्रोजेक्ट की विधि पुस्तकालय की किताबों में है।
4. बच्चों को स्वयं किताबों में वह गतिविधि ढूँढकर अपना प्रोजेक्ट खुद बनाना है।
5. बच्चों या टोली द्वारा बनाए मॉडल खिलौने या अन्य चीजों की बाद में प्रदर्शनी लगाएँ।

क्या खट्टा–क्या मीठा

बच्चे हर चीज के बारे में अपनी राय रखते हैं। उन्हें अपनी राय व्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए। यह गतिविधि उनमें अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में मदद करेगी।

1. सब बच्चे अपनी पसंद की कोई एक किताब चुनें। उसे पढ़ें।
2. सब बारी–बारी से पढ़ी हुई किताब के बारे मे बताएँ।
3. किताब उन्हें कैसी लगी ? किताब की कहानी, कविता या जो भी उसमें है, वह कैसा लगा ? बच्चों से निम्नलिखित बिन्दुओं पर चर्चा करवाएँ–
   - किताब की डिजाइन
   - किताब के चित्र
   - किताब की भाषा
   - किताब की छपाई
   - उसमें अक्षरों का साईज
   - किताब का कागज
   - किताब का दाम
4. संभव हो तो उन्हें इन बिन्दुओं के बारे में लिखने के लिए भी कह सकते हैं।
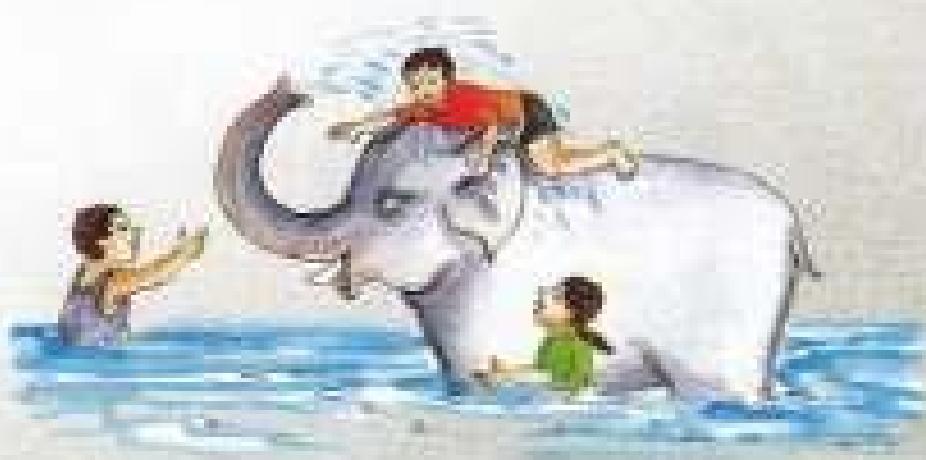
चित्रों में छुपी कहानी

1. पुराने अखबार, पत्र पत्रिकाओं आदि में छपे चित्रों / रेखांकनों को काटकर इकट्ठा करें।
2. प्रत्येक बच्चे को एक-एक चित्र बाँट दें।

3. चित्र देखकर बच्चों को जो कुछ भी याद आता है, जैसे कोई कहावत, मुहावरा या चुटकुला, कोई घटना या कहानी या किसी कविता की लाइनें, या कोई आपबीती, तो बच्चे उसे सुनाएँ या कागज़ पर लिखकर दें।
4. शिक्षक बारी-बारी से सभी चित्रों और उसके आधार पर लिखी गई बातों को सभी बच्चों को पढ़कर सुनाएँ।

पुस्तक वर्ग पहेली
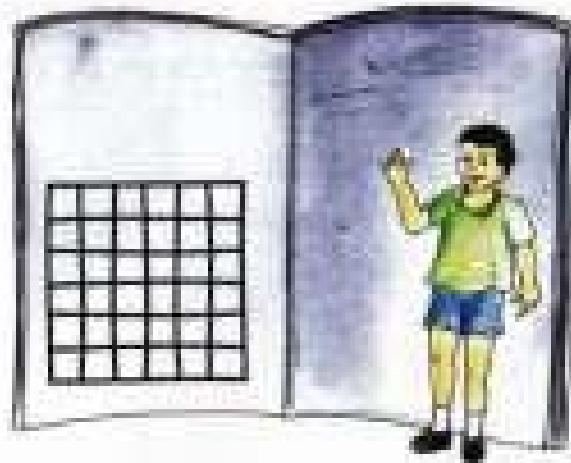
1. ब्लैकबोर्ड या कागज पर वर्ग पहेली को भरने के लिए खाने बना लें।
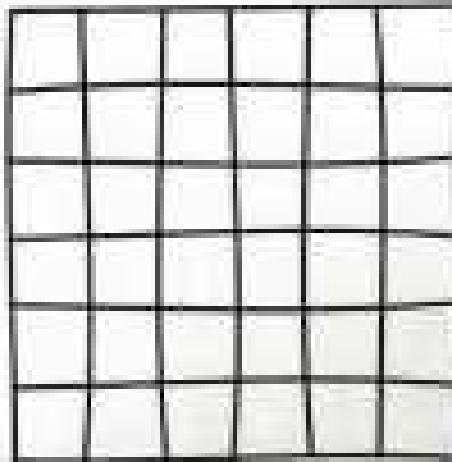
2. बच्चों को एक-एक किताब पढ़ने को दें।
3. शब्द पढ़कर बोलने को कहें।
4. बच्चे द्वारा बोले गए शब्द को वर्ग पहेली के खानों में कहीं भी लिख दें।

जैसे बच्चे ने कहा खिलौना। तो उसे लिख दें।

5. अब बच्चों को पुस्तक में से ऐसे शब्द ढूँढकर बोलने को कहें जिनमें पहले कहे शब्द के वर्ण कहीं न कहीं पर आते हों।
6. जैसे खिलौना में नए शब्द जुड़ सकते हैं, नाक, खिलखिलाना, खिलाड़ी, लोमड़ी, खतरनाक आदि।

6. इस प्रकार बच्चे पुस्तक से नए-नए शब्द खोजकर उसे वर्ग पहेली में भरते जाएँ।
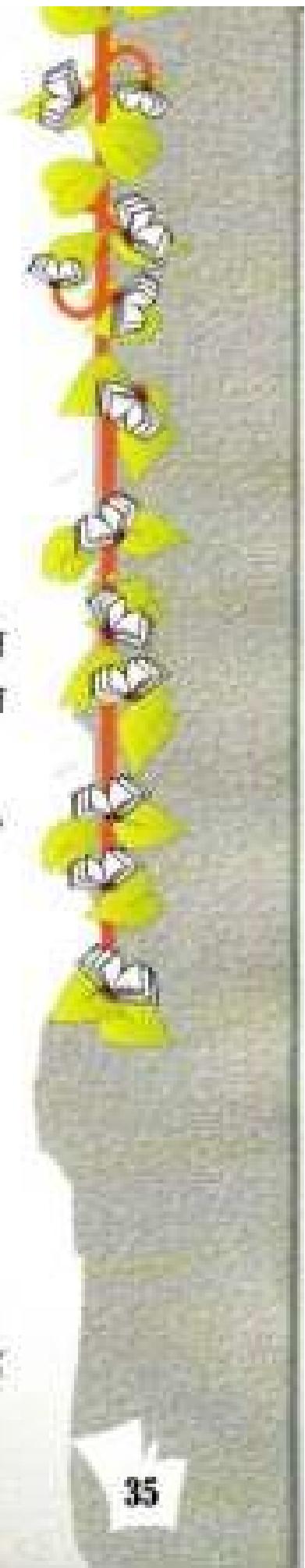
कौन बनेगा ‘ किताबमणि ! ’

'कौन बनेगा करोड़पति' की तर्ज पर 'कौन बनेगा किताबमणि' गतिविधि की जा सकती है। गतिविधि का उद्देश्य बच्चों में किताबों के प्रति रुचि उत्पन्न करना है।

1. यह गतिविधि तब करवाएँ जब बच्चे पुस्तकालय की सब किताबों से परिचित हो जाएँ।
2. शिक्षक पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों के आधार पर 10 से 15 प्रश्न बनाएँ।
3. हर प्रश्न में एक सही उत्तर के अलावा तीन गलत उत्तर हों।
4. यह गतिविधि बच्चों को दो या तीन टोलियों में बाँटकर भी की जा सकती है।
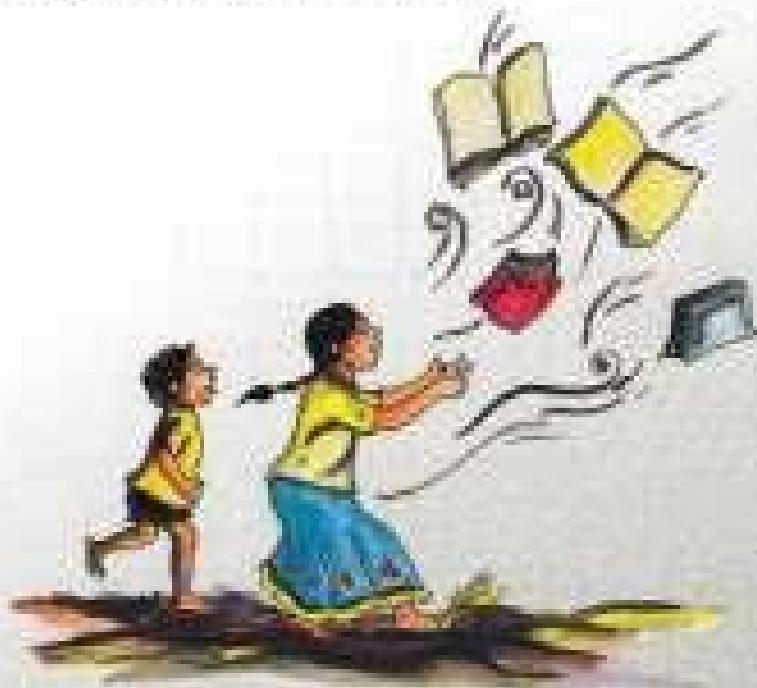
5. प्रश्न के साथ चारों संभावित उत्तर बच्चों को बताएँ। सही उत्तर देने वाले बच्चे या टोली को 5 या 10 जो भी अंक तय करें, दें।
6. जिस बच्चे या टोली के सबसे ज्यादा अंक होंगे वह बनेगा किताबमणि।
7. यह गतिविधि हर दो–तीन माह बाद दुबारा की जा सकती है।
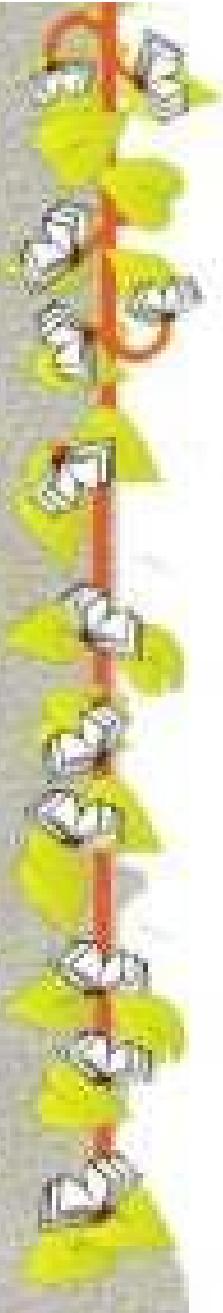
मैना चली पानी खोजने

एक थी मैना। वह नीम के खोखल में रहती थी। नीम का पेड़ था बगीचे में। बगीचे में एक नल भी लगा था। मैना रोज बगीचे में कीड़े-मकोड़े ढूँढती, उन्हें खाती, और नल से पानी पीती।

एक दिन बड़ी गरमी थी। मैना को जोर की प्यास लगी। मैना उड़कर नल पर जा पहुँची और चोंच आगे बढ़ाई। लेकिन नल तो सूखा पड़ा था।

निराश होकर मैना वहाँ से उड़ी और आम के पेड़ पर जा बैठी। वहाँ उसे एक तोता मिला। मैना ने कहा, ''तोते भाई, मुझे बहुत जोर की प्यास लगी है। पानी कहाँ मिलेगा '' तोता बोला, ''पास ही जामुन के पेड़ के नीचे घड़ा रखा है। उस घड़े से लोग पानी पीते हैं। कुछ पानी गिर कर पास ही एक गड्ढे में इकट्ठा हो जाता है। चलो, वहीं चलकर पानी पिएं।''

मैना-तोता उड़कर जामुन के पेड़ पर पहुँचे। पेड़ के नीचे घड़ा तो था लेकिन वहाँ कोई आदमी न था। गड्ढा भी सूख गया था। मैना और तोते ने जामुन के पेड़ पर एक कबूतर देखा। मैना ने कबूतर से पूछा, ''कबूतर भाई, हमें बड़ी प्यास लगी है। पीने के लिए पानी कहाँ मिलेगा। '' कबूतर ने कहा, ''वह लाल ईंटों वाला मकान है न, उसके आँगन में रोज एक औरत कपड़े धोती है। फर्श की दरारों में पानी जमा हो जाता है। चलो, वहाँ चलकर पानी पीते हैं।''

मैना, तोता और कबूतर तीनों साथ- साथ उड़ते हुए लाल ईंटों वाले मकान में जा पहुँचे। लेकिन कपड़े धोने वाली जा चुकी थी। फर्श की दरारों में जमा पानी भी सूख गया था।

तोता परेशानी से बोला, "भई अब क्या करें।" "मुझे तो जोर की प्यास लगी है," मैना ने कहा। कबूतर बोला,"चलो, इधर-उधर उड़ कर पानी ढूँढें। " मैना, तोता और कबूतर तीनों साथ-साथ उड़ चले।

कुछ देर बाद वे पीपल के एक पेड़ पर उतरे। वहाँ बहुत सारी गौरैयाँ बैठी थीं। वे सब खूब मजे से चहचहा रही थीं। चिरर-चिरर-चिर्र र्र र्र।

कबूतर गौरैयों के पास जाकर बोला, "गुटर-गूं, गुटर-गूं। अरे गौरैयो, तुम सब कैसी हो। " एक गौरैया ने बताया, "हम सब अभी नहा कर आए हैं।"

मैना ने अचरज से कहा, "नहा कर! तुम्हें नहाने के लिए पानी कहाँ से मिला!" गौरैया ने कहा, "यह देखो, वहाँ। आओ, मेरे साथ!" बाग में बहुत से गमलों में फूल खिले थे और आसपास बहुत- सी झाड़ियाँ भी उगी हुई थीं। झाड़ियों की छाया में एक बड़ा-सा मिट्टी का कुंडा पानी से भरा हुआ रखा था।

तोता जोश में बोला, "देखो, देखो कुंडे में से हुदहुद पानी पी रहा है!" कबूतर ने कहा, "एक गिलहरी भी है!" मैना ने पूछा, "यह कुंडा वहाँ किसने रखा!" गौरैया ने बताया,"एक छोटे लड़के ने रखा है। वही इसमें रोज पानी भरता है!" मैना, तोता और कबूतर तीनों उड़कर कुंडे के किनारे जा बैठे। उन्होंने खुशी- खुशी अपनी चोंच उसके साफ और ठंडे पानी में डाल दी और जी भर कर पानी पिया।

तीन मछलियाँ

एक तालाब में तीन बड़ी-बड़ी मछलियाँ रहती थीं। उनकी आपस में दोस्ती तो थी, लेकिन तीनों का स्वभाव अलग- अलग तरह का था।

पहली मछली नीले रंग की थी। वह बड़ी सयानी थी। कुछ करने से पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेती थी।

दूसरी मछली लाल रंग की थी। वह हमेशा खुश रहती थी। वह बड़ी चतुर थी। मौके पर चटपट फैसला करना जानती थी। यदि उस पर कोई मुसीबत आती तो फौरन बचने का उपाय खोज निकालती थी।

तीसरी मछली भूरे रंग की थी। वह हर समय मुँह फुलाए रहती थी। केवल पुरानी बातें ही पसन्द करती थी। वह सोचती रहती थी कि जो होना है सो तो होगा ही। होनी को कोई नहीं टाल सकता।
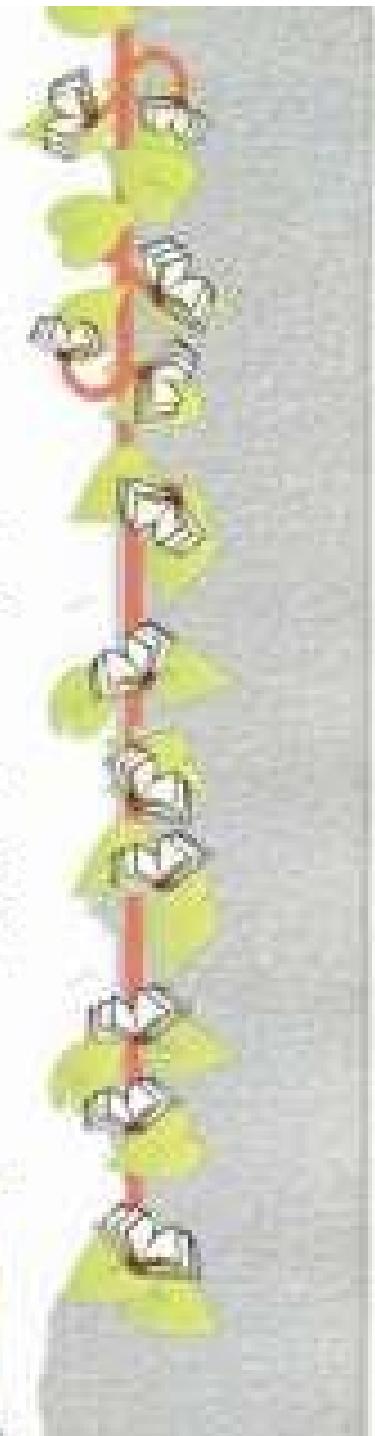
एक दिन नीली मछली ने कुछ मछुआरों को बातें करते सुना। एक मछुआ दूसरे से कह रहा था, "यह नीली मछली कैसी मोटी ताजी है। वाह, इस तालाब में तो और भी मछलियाँ हैं। हम कल यहाँ आकर मछली पकड़ेंगे।"

नीली मछली भागी- भागी अपने दोस्तों के पास पहुँची और सारा हाल सुनाकर बोली,- 'हमें समझ से काम लेना चाहिए आज ही इस तालाब को छोड़कर भाग जाना चाहिए।'

लाल मछली ने कहा, "अरे, मछुवारे आएँ तो सही। मैं बचने का कोई न कोई उपाय निकाल ही लूँगी।" भूरी मछली ने कहा, " मैं जीवन भर इसी तालाब में रही हूँ। मैं इस जगह को केवल इसलिए नही छोड़ सकती कि किसी मछुवारे ने यहाँ मछली पकड़ने की बात कही है। जो होना है, देखा जाएगा।"

तब नीली मछली बोली, "भई मैं तो मछुआरों के आने से पहले ही यहाँ से भाग जाना चाहती हूँ।" ऐसा कह कर नीली मछली दूसरे तालाब में चली गई।

दूसरे दिन मछुआरों ने आकर तालाब में जाल डाला। जाल में बहुत सी मछलियाँ फँस गईं। उनमें लाल और भूरी मछली भी थी। लाल मछली ने खतरा देखा तो ऐसा बहाना कर दिया मानो मर गई हो। एक मछुये ने उसे मरा हुआ समझ कर जमीन पर फेंक दिया।

जमीन पर आते ही लाल मछली धीरे-धीरे रेंगते हुए तालाब के किनारे पहुची और उचक कर तालाब में कूद पड़ी और तैर कर दूर भाग गई। इस तरह उसने अपनी जान बचा ली।

लेकिन भूरी मछली जाल में फँसी-फँसी तड़पती रही।

पकौड़ी गीत

आलू की पकौड़ी, दही के बड़े
मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े
मूंग की मगौड़ी, कलमी बड़े
मंगू की छत पर दो बंदर लड़े
खस्ता कचौड़ी, कांजी के बड़े
गप्पू जी फिसले तो औंधे पड़े!
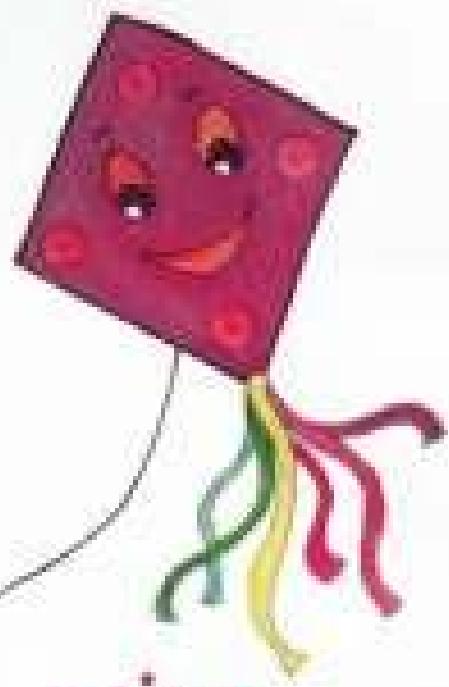
• आचार्य अज्ञात

पतंग

सर सर सर सर
उड़ी पतंग
फर फर फर फर
उड़ी पतंग
इसको काटा
उसको काटा
खूब लगाया
सैर सपाटा
अब लड़ने में जुटी पतंग
अरे कट गई, लुटी पतंग।

• सोहनलाल द्विवेदी

बन्दर

बन्दर नहीं
बनाते घर
घूमा करते
इधर-उधर।
आकर करते
खों खों खों
रोटी हमें न
देते क्यों
छीन-झपट ले
जाएँगे
बैठ पेड़ पर
खाएँगे।

• निरंकार देव सेवक

जामुन

पौधा तो जामुन का ही था
लेकिन आए आम
पर जब खाया तो यह पाया
ये तो हैं बादाम।
जब उनको बोया जमीन में
पैदा हुए अनार
पकने पर हो गये संतरे
मैंने खाए चार।
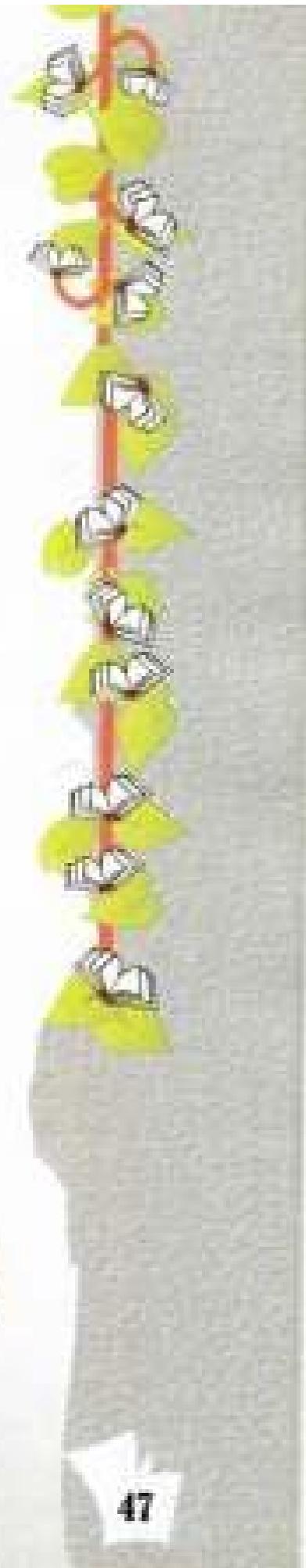
• श्रीप्रसाद

हाउ हाउ हप्प

हाउ हाउ हप्प
एक सुनाऊँ गप्प
बाबाजी की दाढ़ी
झरबेरी की झाड़ी
उस दाढ़ी के अन्दर
घुसे बीसियों बन्दर
करते रहते खों खों खों
यूँही बीते बरसों
हाउ हाउ हप्प
तुम सुनाओ गप्प

• गंगासहाय प्रेमी

छींक

बहुत जुकाम हुआ नंदू को,
एक रोज वह इतना छींका,
इतना छींका, इतना छींका,
इतना छींका, इतना छींका,
सब पत्ते गिर गए पेड़ के,
धोखा उन्हें हुआ आँधी का।

● रामनरेश त्रिपाठी

रेलगाड़ी

रेलगाड़ी रेलगाड़ी
छुक छुक छुक छुक छुक छुक छुक छुक
बीच वाले स्टेशन बोलें
रुक रुक रुक रुक रुक रुक रुक रुक
धड़क-धड़क, लोहे की सड़क
धड़क-धड़क, लोहे की सड़क
यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ,
यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ,
फुलाए छाती, पार कर जाती
बालू-रेत, आलू के खेत
बाजरा, धान, बुढ्ढा किसान
हरा मैदान, मंदिर मकान
चाय की दुकान ऽऽऽ
पुल्ली की डंडी, टीले पे झंडी
पानी का कुंड, पंछी का झुंड
झोपड़ी-झाड़ी, खेती-बाड़ी
बादल-धुआँ, मोट-कुआँ
कुएँ के पीछे, बाग-बगीचे
धोबी का घाट, मंगल की हाट
गाँव का मेला, भीड़ झमेला
टूटी दीवार, टट्टू सवार ऽऽऽ
धरमपुर-करमपुर, करमपुर-धरमपुर
बैंगलोर-मैंगलोर, मैंगलोर-बैंगलोर
मालवा-खंडवा, खंडवा-मालवा
रायपुर-जयपुर, जयपुर-रायपुर
तालेगाँव-मालेगाँव, मालेगाँव-तालेगाँव
नेल्लोर-वेल्लोर, वेल्लोर-नेल्लोर
शोलापुर-कोल्हापुर, कोल्हापुर-शोलापुर
अम्बल-चंडीगढ़, चंडीगढ़-अम्बल
ऐमदाबाद-मेमदाबाद, मेमदाबाद-ऐमदाबाद
यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ
छुक छुक छुक छुक छुक छुक छुक छुक

• हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

राज्य शिक्षा केन्द्र
भोपाल बी-विंग, पुस्तक भवन, अरेरा हिल्स, भोपाल-462011